E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

वेणीसंहार और कथावस्तु

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

'वेणीसंहार' का अर्थ है वेणी बांधना। दुःशासन द्वारा केश-कर्षण किये जाने के बाद द्रौपदी ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक कौरवों का अन्त नहीं होगा तब तक वेणी नहीं बाँधूंगी। नाटक के अन्त में दुर्योधन के रक्त से रंगे हाथों भीम ने द्रोपदी की वेणा बाँधी। इसलिए नाटक का यह नाम पड़ा। सारा का सारा नाटक ओज गुण से मण्डित है। चरित्र चित्रण इस नाटक की सबसे बड़ी विशेषता है। इसके नाटकीय पात्रों में भीम का शौर्य, दुर्योधन का अभिमान, अर्जुन की वीरता, द्रौपदी की भारतीय नारी मर्यादा प्रतिष्ठा आदि बातें सराहनीय हैं। नाटक में वीर रस की प्रधानता है।

'वेणीसंहार' में महाभारतीय कथा की प्रमुख घटनाओं को नाटकीय परिवेश में इस प्रकार बाँधकर रखा गया है कि महाभारत का पूरा कथानक इसमें आलोकित हो उठा है।

परन्तु 'वेणीसंहार' का प्रारंभ भगवान् श्रीकृष्ण के सन्धि प्रयत्न से प्रारंभ होता है, जो महाभारत के उद्योगपर्व में आया है। अत: इससे पूर्व सभापर्व की कथा को यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत कर देना उपयुक्त होगा। पाण्डवों ने बड़े समारोह के साथ राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया। इसमें बहुत से लोग आमन्त्रित हुए। कौरवराज दुर्योधन जब यज्ञशाला आने लगा तब एक विशेष घटना घटी। यज्ञशाला के अन्तर्गत भूभाग की रचना ऐसे ढंग से की गई थी कि जहाँ वास्तव में स्थल था वहाँ जल की भ्रान्ति होती थी और जहाँ जल था वहाँ स्थल प्रतीत होता था। समागत राजाओं का स्वागत करने के लिए मुख्य द्वार पर भीमसेन खड़े थे। जब दुर्योधन आने लगा तो वह स्थल समझकर उधर ही को चल पड़ा, जहाँ वस्तुतः जल था। भीम ने उसको रोका, उसने अपने कुटिल स्वभाववश सोचा कि यह मेरा परिहास कर रहा है। अतएव वह उधर ही को बढ़ा। कुछ दूर जाने पर अगाध जल में डूबने लगा। तब दुःशासन ने पीछे से कूदकर उसे जल से बाहर किया।

राजभवन से द्रोपदी यह दृश्य देख रही थी। उसने अपनी सहचरी से कहा कि मैंने समझा था कि वंश परम्परा यहाँ से बदल गई है। किन्तु मेरा यह भ्रम था। अंधे का अंधा ही होता है । द्रौपदी का यह विकट परिहास दुर्योधन के कानों में पड़ा। उसका क्रोध भड़क उठा। उसने इस अपमान का बदला लेने को ठान लिया। अपने मामा शकुनि तथा परम मित्र कर्ण से परामर्श करके पाण्डवों के विनाश का षड्यंत्र रचा। शकुनि द्यूत विद्या में परम निपुण तथा धूर्त था। इधर युधिष्ठिर को भी जुए का दुर्व्यसन था। इसलिए कौरवों ने इन्हें दीपावली की रात्रि में जुआ खेलने के लिए आमंत्रित किया। दुर्योधन की ओर से शकुनि खेलने लगा। पासे ऐसे ढंग से बनाये गये थे कि वे कभी युधिष्ठिर के अनुकूल पड़े ही नहीं। परिणामस्वरूप युधिष्ठिर अपना राज-पाट, भाई एवं द्रौपदी तक को दांव पर लगाकर हार गया।

दुर्योधन को अब अपनी दुष्ट इच्छा पूर्ण करने का अवसर मिला। उसने अन्तःपुर से द्रौपदी को दुःशासन के द्वारा पकड़ मँगवाया और भरी सभा में उससे कहा-'अरी दासी! तू अपना उत्तरीय परिधान उतारकर मेरी जांघ पर आ बैठ। इसमें कोई लज्जा की बात नहीं है, क्योंकि यह अन्धराज की सभा है। इसमें किसी को कुछ सूझता नहीं। यह कहकर उसने दुःशासन को आज्ञा दी कि इसकी साड़ी खींच लो। दुःशासन ने द्रौपदी को नग्न करने की बहुत चेष्टा की, परन्तु भगवान् कृष्ण की कृपा से द्रौपदी का चीर इतना बढ़ गया कि दुःशासन खींचते-खींचते थक गया, पर द्रौपदी को निर्वस्त्र न कर सका।

पाञ्चाली का यह दारुण अपमान देखकर भीमसेन ने प्रतिज्ञा की कि मैं इस पापी दुःशासन के वक्षः स्थल को विदीर्ण करके उसके कोष्ण रुधिर का पान करूँगा। दुर्योधन के लिए उसने प्रतिज्ञा की कि गदा-प्रहार से इसकी जंघा को तोड़ डालूँगा। द्रौपदी ने भी प्रतिज्ञा की कि जब तक दुःशासन के रक्त से मेरे बाल नहीं भीगेंगे तब तक मैं अपनी वेणी नहीं बाँधूंगी। इस बात पर भीमसेन ने उसे विश्वास दिलाया कि मैं स्वयं दुःशासन के रक्त से लथ-पथ अपने हाथों से तुम्हारी बुली हुई वेणी को बाँधूंगा। उसी समय अर्जुन ने कर्ण को, धर्मराज ने शल्य को और सहदेव ने शकुनि को मारने की प्रतिज्ञा की। इसके बाद शर्त के अनुसार द्रौपदी सहित पांचों पाण्डव वन को चले गये। जब बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास समाप्त हो गया तब पाण्डवों ने विराटपुर में अपने को प्रकट किया। यहां

पर अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु का विवाह मत्स्यराज उत्तरा के साथ हो गया। इस विवाह में यादव, पाञ्चाल तथा अन्य राजा भी सम्मिलित हुए।

विवाह समारोह की समाप्ति के पश्चात् सभी राजाओं ने मिलकर तय किया कि पाण्डवों की अज्ञातवासावधि समाप्ति हो गई, इसलिए दुर्योधन से कहा जाय कि अब इनका राज्य लौटा दें। इस प्रस्ताव को लेकर पाञ्चालराज के पुरोहित हस्तिनापुर गये, परन्तु दुर्योधन ने नकारात्मक उत्तर दिया। तब धर्मराज ने स्वयं भगवान् कृष्ण को संदेश देकर दुर्योधन के पास भेजा कि यदि हम लोगों को केवल पाँच गाँव- इन्द्रप्रस्थ, वृकप्रस्थ, जयन्त, वारणावत और एक कोई भी दे दे तो हम वंशविनाशक संग्राम में प्रवृत्त न होकर सन्धि कर लेंगे। भगवान् इस सन्धि प्रस्ताव को लेकर हस्तिनापुर गये। यह बात महाभारत के उद्योगपर्व में आयी है। यहीं से नाटक प्रारंभ होता है और इसकी समाप्ति युधिष्ठिर के राज्याभिषेक पर होती है, जो महाभारत के शान्तिपर्व में आया है। इस प्रकार वेणीसंहार में महाभारत के उद्योगपर्व से लेकर शान्तिपर्वं तक की घटनाओं को नाटकीय आवश्यकतानुसार भागत्यागपूर्वक संक्षिप्त, परिवर्तित एवं परिवर्धित करके अपनाया गया है।